

कोटिशतं द्वादश चैव कोट्यो, लक्ष्याण्यशीतिस्त्र्यधिकानि चैव ।
 पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्या-मेतदश्रुतं पंचपदं नमामि ॥१॥
 अरहंत भासियत्थं गणहरदेवेहिं गंधियं सव्वं ।
 पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाण-महोवयं सिरसा ॥२॥
 अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
 साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥३॥
 दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठिते सति ।
 फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुंगवैः ॥४॥
 तत्त्वार्थसूत्रकर्तारं गृद्ध्रपिच्छोपलक्षितम् ।
 वंदे गणीन्द्रसंजात-मुमास्वामि-मुनीश्वरम् ॥५॥
 जं सक्कइ तं कीरइ जं पण सक्कइ तहेव सद्वहणं ।
 सद्वहमाणो जीवो पावइ अजरामरं ठाणं ॥६॥
 तव यरणं वयधरणं संजमसरणं च जीवदयाकरणम् ।
 अंते समाहिमरणं चउविह दुक्खं णिवारेई ॥७॥
 इति तत्त्वार्थसूत्रापरनाम तत्त्वार्थाधिगममोक्षशास्त्रं समाप्तम् ।

सिद्धों के दरबार में

हमको भी बुलवालो भगवन, सिद्धों के दरबार में ॥टेक॥
 जीवादिक सातों तत्वों की, सच्ची श्रद्धा हो जाये ॥
 भेदज्ञान से हमको भी प्रभु, सम्यक्दर्शन हो जाये ।
 मिथ्यातम के कारण स्वामी, हम डूबे संसार में ॥
 हमको भी बुलवालो स्वामी ॥१॥
 आत्मद्रव्य का ज्ञान करें हम, निज स्वभाव में आ जायें ।
 रत्नत्रय की नाव बैठकर, मोक्ष महल को पा जायें ।
 पर्यायों की चकाचौंध से, बहते हैं मझधार में ॥
 हमको भी बुलवालो स्वामी ॥२॥